प्रकाशन तिथि : 15 मई, 2022
प्रेषण तिथि : 19 मई, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 05 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

इतिहास प्रेरणा का जीवंत स्रोत हैः शेखावत

देशभर में उत्साह से मनाई आंग्ल तिथि अनुसार महाराणा प्रताप जयंती

अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप की जयंती 9 मई को आती है। स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान के अमर प्रतीक महाराणा प्रताप की 482वीं जयंती के उपलक्ष में 9 मई को देशभर में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित करके उनके प्रति श्रद्धा प्रकट की गई। 8 मई को रविवार होने के कारण उस दिन भी जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम रखे गये। इसी क्रम में 8 मई को नई दिल्ली में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के निवास 12, अकबर रोड पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के दिल्ली प्रांत द्वारा महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। गजेंद्र सिंह शेखावत ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे लिए इतिहास 'पॉइंट ऑफ रेफरेंस' ना होकर प्रेरणा का जीवंत स्रोत होना चाहिए। हमारा गौरवशाली इतिहास इतना समृद्ध है कि उससे प्रेरणा लेकर हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदर्श की ओर बढ़ सकते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी हमें हमारे इतिहास की याद दिला कर राम, कृष्ण, दुर्गादास और प्रताप बनने के मार्ग पर अग्रसर करता है। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप का संघर्ष सत्ता के लिए नहीं बल्कि स्वाभिमान, स्वतंत्रता और देश प्रेम जैसे मूल्यों के लिए था। यही कारण है कि महाराणा प्रताप भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में कहीं भी स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए संघर्ष करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मध्यकालीन इतिहास में महाराणा प्रताप भारतीयता के श्रेष्ठतम उदाहरण हैं। हमारे इतिहास पर कुदृष्टि रखने वाले हमारे विरोधी लोगों ने षडयंत्र पूर्वक प्रताप को हल्दीघाटी युद्ध तक ही सीमित कर दिया है जबकि दिवेर के युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय और युद्ध के बाद महाराणा प्रताप के नेतृत्व मेवाड़ के वैभवशाली उत्कर्ष को पुस्तकों से गायब ही कर दिया गया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

श्री राजपूत छात्रावास बाड़मेर में नवनिर्मित मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा

बाड़मेर स्थित श्री राजपूत छात्रावास, एनएच-68 में श्री पाबूजी राठौड़ तथा सरस्वती व जगदंबा के नवनिर्मित मंदिर में प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा समारोह पूर्वक 7 मई को की गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर व तारातरा मठ के महंत प्रताप पुरी जी महाराज के सानिध्य में आयोजित समारोह में बड़ी संख्या में समाज बंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संरक्षक श्री ने कहा कि यह पत्थर का मंदिर जिसे हम इंसानों ने बनाया है इसके प्रति हम जितने गंभीर हैं उससे कहीं अधिक गंभीर उस मंदिर के लिए होने की आवश्यकता है जो स्वयं भगवान द्वारा निर्मित है। यह मानव शरीर ही ईश्वर द्वारा निर्मित वह मंदिर है। इस शरीर में आत्मा के रूप में ईश्वर का जो अंश विराजमान है उसको जानकर उसकी सेवा की जाए तो हमारे जीवन का कल्याण हो सकता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि जो कभी मंदिर नहीं जाता है वह भी नास्तिक है और जो जीवन भर केवल मंदिर ही जाता है वह भी नास्तिक ही है। (शेष पृष्ठ 2 पर)

मुख्यमंत्री से भेंट कर जताया आभार

राज्य सरकार ने आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) के आरक्षण के प्रावधानों में एक और बड़ी राहत देते हुए आय व संपत्ति प्रमाणपत्र के प्रतिवर्ष नवीनीकरण से मुक्ति दी है और इसे तीन वर्ष के लिए मान्य कर दिया है। अब इस वर्ग के अभ्यर्थियों के ऐसे प्रमाण पत्रों का तीन वर्ष तक अपनी वार्षिक आय का एक शपथ पत्र ही देना होगा एवं तीन वर्ष बाद प्रमाणपत्र का नवीनीकरण करवाना आवश्यक होगा। श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ने राज्य सरकार से अनेक बार ऐसी मांग की थी। श्री प्रताप फाउंडेशन के संरक्षक माननीय महावीर सिंह जी ने मुख्यमंत्री महोदय से भेंट के अवसर पर भी इस विषय को उनके सामने रखा था। (शेष पृष्ठ 2 पर)

EWS सरलीकरण के लिए केन्द्रीय मंत्री से मिला प्रतिनिधिमंडल

EWS आरक्षण की शर्तों व अन्य प्रावधानों में राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, तेलंगाना आदि राज्यों की सरकारों ने संशोधन कर उन्हें सरल बनाया हैं लेकिन केन्द्र सरकार के स्तर पर अभी तक पुराने प्रावधान बने हुए हैं जिसके कारण केन्द्रीय संस्थानों में इस वर्ग के अधिकांश लोगों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा अनेक बार विभिन्न माध्यमों से इस विषय को केन्द्र सरकार के प्रतिनिधियों तक पहुंचाया गया है। इसी कड़ी में 8 अप्रेल को केन्द्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के आवास पर फाउंडेशन का एक प्रतिनिधिमंडल उनसे मिला और उच्च स्तर पर इस विषय में चर्चा करने का आग्रह किया। माननीय मंत्री महोदय ने सभी राज्यों से इस संबंध में तथ्य एकत्र कर शीघ्र ही प्रधानमंत्री जी तक इस विषय को पहुंचाने का आश्वासन दिया।

महाराणा प्रताप एक जननायक, एक कुशल प्रशासक

(प्रताप जयंती विशेष)

महाराणा प्रताप को शासक बनने के बाद मेवाड़ की स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए लम्बे समय तक साम्राज्यवादी मुगल शासक अकबर के साथ निरन्तर संघर्षरत रहना पड़ा। परन्तु महाराणा प्रताप के अदम्य साहस, कुशल युद्ध संचालन और उनके स्वतंत्रय प्रेम के समक्ष अकबर के सभी आक्रमण और योजनाएं विफल हो गई। अकबर ने भी अन्त में इस स्थिति को स्वीकार कर लिया और 1585 ई. के बाद मेवाड़ पर कोई सैन्य अभियान नहीं किया। 1585 ई. से 1597 ई. इस काल में महाराणा प्रताप ने अपने कुशल शासन प्रबंध और अथक परिश्रम से मेवाड़ में सुव्यवस्था स्थापित की। मुगलों के साथ संघर्ष काल में महाराणा प्रताप का अधिकांश समय मेवाड़ के पर्वतीय क्षेत्रों में निकला, इस दौरान महाराणा प्रताप का ध्यान मेवाड़ के पश्चिमी-दक्षिणी भाग पर पड़ा। 1585 ई. में प्रताप ने लूणा चावण्डिया को परास्त कर चावण्ड तथा समस्त छप्पन प्रदेश को अपने अधीनस्थ कर लिया। यहीं से चावण्ड को महारामा प्रताप की राजधानी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चावण्ड महाराणा प्रताप ही नहीं वरन् अमरसिंह के शासन काल मे भी 1615 ई. तक मेवाड़ की राजधानी बनी रही। चावण्ड के महलों के भग्नावशेष बताते है कि 1585 ई.-1597 ई. के काल में प्रताप ने मेवाड़ की आर्थिक स्थिति को पुनः सुदृढ़ कर दिया था। महाराणा प्रताप ने राजप्रसादों के निर्माण द्वारा अपनी राजधानी चावण्ड को सुन्दर बनाया। इन राजप्रसादों में सौन्दर्य के साथ-साथ युद्धकाल की भीषणता को देखते हुए सुरक्षा को भी बराबर महत्व दिया गया। इन राजप्रसादों के पास महाराणा प्रताप के सैन्यधिकारियों और जन सामान्य के आवास भी थे। चावण्ड में अनेक सुन्दर मंदिरों का निर्माण करवाया गया, जिनमें चामुण्डा देवी का मंदिर उल्लेखनीय है। मुगलों के साथ लम्बे समय तक चले संघर्ष में प्रताप की सफलता सिद्ध करती है कि वे एक सफल, कुशल सैन्य संचालक थे जिन्होंने संघर्ष के लिए अनेक नए तरीके अपनाएं। महाराणा प्रताप ने पूरे पहाड़ी क्षेत्र में स्थान-स्थान पर सैन्य चौकियां स्थापित की और गुप्तचरों का एक जाल बिछा दिया, जिससे शत्रु पक्ष की सूचनाएं उन तक पहुंच जाती थी। इस रक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रताप ने मेवाड़ के पूर्वी भाग को खाली करवा कर वहां की प्रजा को पहाड़ी प्रदेशों के सुरक्षित स्थानों पर बसा दिया गया, जगह-जगह पहाड़ी अत्यकाओं में कृषि की व्यवस्था से प्रजा को कार्य भी मिल गया और वो भू-भाग आबाद हो गया। इस व्यवस्था से प्रजा शत्रु पक्ष के आक्रमणों से सुरक्षित हो गई, और शत्रुओं के लिए उस भू-भाग से रसद प्राप्त करने की संभावना भी समाप्त हो गई। एक बार ही युद्ध लड़कर शत्रु को समाप्त करना या अपनी सम्पूर्ण शक्ति को उसमें व्यय करने की अपेक्षा प्रताप ने युद्ध को लम्बा बढ़ा कर (छोटे-छोटे युद्धों से) शत्रु की शक्ति को नष्ट करने की तकनीक अपनाई। शत्रु को अचानक आक्रमण कर उसकी छावनी में घेर लेना, उसकी रसद को रोक लेना, भागती शत्रु सेना का पीछा कर उसका अधिकतम नुकसान करना जैसे तरीकों ने शत्रु को परेशान कर उसके मनोबल को पस्त कर दिया और लगभग मेवाड़ के अधिकांश भाग को मुगलों से मुक्त करा लिया। जन जागरण तथा जन संगठन की क्षमता भी प्रताप में असाधारण रूप से थी। इस लम्बे संघर्ष काल में सम्पूर्ण मेवाड़ में घूम-घूमकर तथा कष्ट साध्य जीवन बिता कर उन्होंने सम्पूर्ण जनता के नैतिक स्तर को बनाए रखा। प्रताप ने उनके जीवन की समस्या को अपने जीवन की समस्या बनाया। वो प्रजा के बीच लगातार भ्रमण करके उनके मनोबल को दृढ़ बनाकर मुगलों से इस संघर्ष को एक जन आंदोलन में बदल दिया। प्रताप द्वारा संघर्ष को इस नए रूप में बदलने पर मुगलों के लिए अपने विशाल संसाधनों के बावजूद भी प्रताप से मुकाबला करना असंभव हो गया। 1585 ई. के बाद जब महाराणा प्रताप ने सम्पूर्ण मेवाड़ को एक सूत्र में संगठित कर दिया तो प्रताप ने जनजीवन को सुव्यवस्थित करने का कार्य प्रारम्भ किया। समुचित शासन व्यवस्था के लिए वे शासन के प्रमुख कर्णधार थे परन्तु प्रशासनिक सुविधा के लिए उन्होंने नए विभागों का गठन किया और विभागाध्यक्षों के रूप में योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति की। महाराणा ने नई शासन व्यवस्था के लिए योग्य लोगों का दल तैयार किया। समसामयिक ग्रन्थों व अन्य ऐतिहासिक स्त्रोतों से पता चलता है कि महाराणा प्रताप की राजधानी में कानून व्यवस्था व न्याय व्यवस्था का आदर्श रूप था जिससे राज्य में अपराध व अपराधी दोनों ही नाम मात्र के थे। अमरसार ग्रन्थ में इस बात को कहा गया है कि 'प्रताप के राज्य में पाश की विद्यमानता स्त्रियों की अलकाओं में ही थी, चोरों को पकड़ने के लिए पाश का प्रयोग नहीं होता था।' इसका आशय है कि प्रजा में नैतिक आचरण व्याप्त था, अतएवं दण्ड में कठोरता का प्रयोग करने की कोई आवश्यकता न थी। इस शांति काल में व्यापार और वाणिज्य में भी अत्यधिक वृद्धि हुई, गुजरात और मालवा से अच्छे व्यापारिक संबंध विकसित हुए। एक अच्छे शासक की भांति प्रताप ने कलात्मक प्रवृतियों को भी प्रोत्साहन दिया। इन प्रवृतियों में चित्रकला की प्रवृति अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो 'चावण्ड शैली' नाम से विश्व विख्यात है। इस शैली में विषय के प्रतिपादन में तथा रंगों के प्रयोग में सादगी तथा भाव प्रदर्शन में गाम्भीर्य प्रमुख है। इस शैली में प्रताप के समय चित्रकला के क्षेत्र की अनुपम धरोहर 'रागमाला' का निर्माण हुआ जिसका निर्माता 'नसरुद्दीन' नामक चित्रकार था। चित्रकला की भांति प्रताप ने स्थापत्य कला में भी विशेष रुचि ली, उनके समय के स्थापत्य में सैनिक तथा जन साधारण के जीवन के स्थापत्य का सुन्दर सम्मिश्रण था। चावण्ड के महलों में दबी हुई नालियां दूरस्थ स्थानों से जल लाने की सुन्दर प्रणाली पर प्रकाश झलती है। महाराणा प्रताप की इस व्यवस्था में साहित्यक उन्नति को भी पूरा अवसर मिला, संस्कृत भाषा के अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। प्रताप के आश्रय में चक्रपाणि मिश्र ने विश्व-वल्लभ जैसे श्रेष्ठ ग्रन्थ की रचना की। महाराणा प्रताप ना केवल एक कुशल योद्धा, सेनानायक ही थे वरन् वो एक कुशल प्रशासक, श्रेष्ठ संगठन कर्ता, एक व्यवस्थापक व एक जननायक थे।

(पृष्ठ एक का शेष)

श्री राजपूत... मंदिर जाना कोई बुरी बात नहीं है, परंतु इससे हमारे जीवन व्यवहार में यदि कोई परिवर्तन नहीं आता है तो यह व्यर्थ ही होगा। जिस प्रकार मंदिर में ईश्वर की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करके हम उसका पूजन करते हैं उसी भांति अपने हृदय में विराजमान ईश्वर को पहचान कर उसकी आराधना करना हम प्रारंभ कर दें तो हमारे जीवन में वास्तविक भक्ति का प्रादुर्भाव होगा। प्रताप पुरी जी महाराज ने कहा कि वीर पाबूजी के जीवन से प्राणी मात्र की रक्षा का संदेश मिलता है। क्षत्रिय का जीवन केवल अपने लिए नहीं बल्कि सभी के लिए होता है इस बात को पाबूजी के बलिदान ने सिद्ध किया है। हमें भी उन्हीं की भांति अपना कर्तव्य पालन करते हुए दुर्लभ मनुष्य जीवन को सार्थक करना चाहिए। रावत त्रिभुवन सिंह बाड़मेर ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को लगन व निष्ठा से अध्ययन करना चाहिए जिससे वे उच्च पदों पर पहुंच कर समाज और राष्ट्र की सेवा कर सकें। राजपूत सेवा समिति के कार्यकताओं ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

मुख्यमंत्री से... इस विषय पर एकाधिक बार समाचार माध्यमों का भी सहारा लिया गया था। अंततः सरकार ने 6 अप्रेल को तत्संबंधी आदेश जारी कर दिए। सरकार के इस सकारात्मक निर्णय के लिए माननीय मुख्यमंत्री जी का आभार जताने के लिए माननीय महावीर सिंह जी जयपुर की अन्य सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधिमंडल के साथ 7 अप्रेल को मुख्यमंत्री आवास पहुंचे और उनसे मिलकर इस निर्णय के लिए आभार जताया। इस अवसर पर राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष रामसिंह चंदलाई अपनी कार्यकारिणी सहित व भवानी निकेतन शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष शिवपाल सिंह नांगल अपनी कार्यकारिणी सहित उपस्थित रहे। माननीय महावीर सिंह जी ने आभार जताने के साथ साथ शेष रही विसंगतियों को ठीक करने का भी आग्रह किया। उन्होंने बताया कि महिलाओं के प्रमाण पत्र बनाने के स्पष्ट निर्देश के अभाव में उनको अभी भी पीहर और ससुराल के प्रशासनिक कार्यालयों में चक्कर काटने पड़ते हैं और अनावश्यक विलंब होता है। साथ ही पति और पिता दोनों की आय जोड़ने के कारण अनावश्यक भ्रम पैदा होता है तथा श्रम व समय अनावश्यक खर्च होता है। इसलिए निवेदन किया गया कि विवाहित महिलाओं के लिए केवल पति की आय की ही गणना करने का प्रावधान किया जाए। साथ ही निवेदन किया गया कि अन्य सभी प्रकार के आरक्षण में राज्य से बाहर के अभ्यर्थियों को आरक्षण नहीं मिलता जबकि EWS में अन्य राज्यों के अभ्यर्थी भी यहां आरक्षण का लाभ ले रहे हैं, इसे रोकने के आदेश जारी किए जाएं। माननीय मुख्यमंत्री जी ने इन सब समस्याओं को सुना एवं आवश्यक कार्यवाही का आश्वासन दिया। इस अवसर में पंचायती राज एवं अन्य स्वायत्तशासी संस्थाओं में भी EWS आरक्षण की संभावनाओं पर चर्चा की गई।

मेवाड़ का गुहिल वंश

समरसिंह के बाद उनके पुत्रों में से रतनसिंह चित्तौड़ के शासक बने जबकि दूसरे पुत्र कुम्भकर्ण का नेपाल की ओर जाना पाया जाता है जिनसे नेपाल के राणाओं की शाखा चली। रावल रतनसिंह के शासक बनने के कुछ समय बाद ही अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। अलाउद्दीन खिलजी एक साम्राज्यवादी शासक था जो चित्तौड़ के सामरिक महत्व को जानता था। चित्तौड़ के दुर्ग पर इससे पहले भी सल्तन्त काल के अनेक मुस्लिम शासकों ने आक्रमण किए थे। परन्तु उन सभी को विफलता प्राप्त हुई, चित्तौड़ की स्वाधीनता और स्वाभिमान अलाउद्दीन के शूल सा चुभ रहा था। इसीलिए 1303 ई. में अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। दक्षिण भारत पर विजय और उत्तर भारत पर अलाउद्दीन का स्थायी प्रभाव तभी कायम रह सकता था जब चित्तौड़ उसकी अधीनता में आता। अलाउद्दीन की विशाल सेना ने टिड्डी दल की भांति चित्तौड़ को घेर लिया था। यह घेरा कुछ मास तक रहा जिसमें अलाउद्दीन को कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई परन्तु जब किले की रसद सामग्री का अभाव हो गया तब मेवाड़ के राजपूत वीरों ने रावल रतनसिंह के नेतृत्व में शाका करने का निश्चय किया। राजपूत सेना किले के द्वार खोल अलाउद्दीन की विशाल सेना पर यमदूत बनकर टूट पड़ी, लेकिन शत्रु की विशाल सेना के सामने राजपूत सेना जो संख्या में बहुत ही कम थी, का अद्भूत शौर्य भी विजय नहीं दिला पाया। रावल रतनसिंह वीरगति को प्राप्त हुए। रावत गोरा और उनके भतीजे बादल ने वीरगति प्राप्त करने से पहले अद्भुत युद्ध कौशल दिखलाया। सीसोदे के सामन्त लक्ष्मणसिंह भी अपने सात पुत्रों के साथ वीरगति को प्राप्त हुए। राजपूत वीरांगनाओं ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए रानी पद्मिनी के नेतृत्व में जौहर किया। चित्तौड़ पर अधिकार के बाद अलाउद्दीन ने प्रजा का कत्ले आम करवाया। अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर अधिकार के बाद अपने पुत्र खिज्र खां को वहां का प्रशासक नियुक्त किया जो 1313 ई. तक चित्तौड़ रहा लेकिन इस काल में उससे चित्तौड़ में सही प्रकार से शासक व्यवस्था लागू नहीं हो पाई। चित्तौड़ के राजपूत सरदार लगातार उसके समक्ष चुनौतियां खड़ी करते रहे और उसको वहां शांति से नहीं रहने दिया जिसके कारण अलाउद्दीन ने खिज्र खां को चित्तौड़ से अपने पास बुला लिया। जालौर का मालदेव सोनगरा भी लगातार उत्पात मचा रहा था तब अलाउद्दीन ने उसे चित्तौड़ का प्रशासक बना कर उसके विद्रोह को शांत किया। मालदेव के चित्तौड़ का प्रशासक बनने के बाद सीसोदे के हम्मीर, जो कि अरि सिंह का पुत्र था, ने मालदेव के राज्य में उत्पात मचाना प्रारम्भ कर दिया। हम्मीर ने वि.सं. 1383 के आसपास चित्तौड़ पर अधिकार कर अपने पूर्वजों के राज्य को पुनः प्राप्त किया। **(क्रमशः)**

विचार गोष्ठियां एवं बैठकें कर दिया सकारात्मकता का संदेश

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की जिला समितियों द्वारा विचार गोष्ठियां एवं बैठकें कर समाज में सकारात्मक क्रियाशीलता को बढ़ाने हेतु किए जा रहे प्रयासों की कड़ी में 24 अप्रैल को पाली जिले के बर एवं सिरोही के रेवदर की कार्यविस्तार बैठक सम्पन्न हुई। दोनों बैठकों में फाउंडेशन की कार्ययोजना को धरातल पर क्रियान्वित करने पर चर्चा हुई। 28 अप्रैल को जयपुर जिला समिति द्वारा विद्याधर नगर विधानसभा स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य श्रवण सिंह बगड़ी ने गोष्ठी में संगठन द्वारा किये जा रहे समाजोपयोगी कार्यों के बारे विस्तार से बताया। फाउंडेशन के जयपुर जिला प्रभारी रूपेंद्र सिंह करीरी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ और समाज के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ाने हेतु प्रयासरत संघ के अन्य आनुषंगिक संगठन श्री प्रताप फाउंडेशन के बारे में बताया। कार्यक्रम में फाउंडेशन के जिला समिति सदस्य मनदीप सिंह हुडील, पार्षद चैयरमेन अजय सिंह चौहान, प्रताप सिंह टटेरा, विरेन्द्र सिंह हुडील, चतर सिंह नरूका एवं कृष्ण सिंह राठौड़ ने भी अपने विचार रखे। 30 अप्रैल को जयपुर जिला समिति द्वारा चौमू विधानसभा के खन्नीपुरा में स्थित जमवाय माता जी मंदिर प्रांगण में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने संघ एवं इसके आनुषंगिक संगठनों के बारे में विस्तार से बताते हुए मतदान के प्रति समाज मे व्याप्त उदासीनता पर प्रकाश डाला एवं इसकी वजह से निरंतर घट रही राजनैतिक भागीदारी को फिर से बढ़ाने हेतु श्री प्रताप फाउंडेशन की कार्य योजना के महत्व को समझाया। फाउंडेशन के जयपुर जिला प्रभारी रूपेंद्र सिंह करीरी ने संगठन की कार्यप्रणाली के बारे में बताया। कार्यक्रम में फाउन्डेशन के जयपुर जिला समिति सदस्य आदित्य प्रताप सिंह झाझड़, दयाल सिंह श्यामपुरा, राजवीर सिंह नरूका, करण सिंह सांदरसर, गिरवर सिंह इटावा भोपजी, भगवान सिंह खन्नीपुरा और माल सिंह सांदरसर ने भी अपने विचार रखे। नागौर जिले की परबतसर विधानसभा क्षेत्र के गुढा राजावतान में 7 मई एवं मिठड़ी गांव में 8 मई को ग्राम पंचायत स्तरीय कार्य विस्तार बैठकें सम्पन्न हुई। इन बैठकों में फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य जय सिंह सागु ने फाउंडेशन की कार्ययोजना के बिंदुओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान संघ के नागौर संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा, फाउंडेशन के जिला समिति सदस्य दीपेंद्र सिंह पलाड़ा, लोकेंद्र सिंह मीठड़ी, मानवेन्द्रसिंह चुआ और विनोद सिंह लीचाणा सहित अन्य स्थानीय समाजबंधु उपस्थित रहे। 8 मई को ही पाली जिले की रायपुर तहसील के करमावास मालियान गांव की

बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में आर्थिक कमजोर वर्ग (EWS) के आरक्षण एवं लोकतंत्र में मतदान के महत्व के विषय पर चर्चा हुई। इसी दिन बीकानेर जिले की लूणकरणसर तहसील के बिंजरवाली एवं सोढवाली गांव की बैठकें भी सम्पन्न हुई। इन बैठकों में फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य जुगल सिंह बेलासर ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्कार निर्माण के कार्य में सभी को भागीदार बनने हेतु संघ के शिविरों व शाखाओं में स्वयं जुड़नें एवं अन्यों को भी जोड़ने का आग्रह किया तथा नवीन सिंह भवाद ने फाउंडेशन की कार्ययोजना को समझाया। इसी दिन जैसलमेर जिले की मोहनगढ़, झिनझिनयाली, भैंसड़ा व सांकड़ा गाँवो की कार्यविस्तार बैठकें भी सम्पन्न हुई। इन बैठकों में पुष्कर में आयोजित केंद्रीय परिषद की बैठक में बनाई गई कार्ययोजना के बारे में बताया गया एवं आगे की तहसील स्तरीय कार्ययोजना बनाई गई, साथ ही श्री प्रताप फाउंडेशन के कार्यों पर भी चर्चा हुई। बूंदी के श्री राजपूत छात्रावास में भी इसी दिन कैरियर काउंसलिंग का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें आनंद सिंह जी नरुका एवं सज्जन सिंह जी सांकड़ा ने छात्रावास में रह रहे छात्रों का प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी एवं कैरियर संबंधी मार्गदर्शन किया।

बेंगलुरु (कर्नाटक) में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर बेंगलुरु में व्हाइटफील्ड रेलवे स्टेशन के निकट स्थित प्रगति स्कूल में 29 अप्रैल से 1 मई तक आयोजित हुआ। प्रांतप्रमुख पवन सिंह बिखरनिया ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रशिक्षित कर रहा है। आज के समय में सभी ओर दुष्प्रवृतियां बढ़ती हुई दिखाई दे रही हैं। यह दुष्प्रवृतियां समाज, राष्ट्र और मानवता को पतन की ओर ले जा रही हैं। इन दुष्प्रवृतियों का प्रसार रोकने का केवल एक ही उपाय है कि समाज की युवा पीढ़ी को चरित्रवान और विवेकशील बनाया जाए। यह कार्य नियमित और निरंतर अभ्यास से ही संभव है इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के द्वारा ऐसे शिविरों का निरंतर आयोजन कर रहा है। यह कार्य बहुत कठिन और दीर्घकालीन है लेकिन यदि हम संकल्प पूर्वक निरंतर सक्रिय रहकर कार्य करें तो हम श्री क्षत्रिय युवक संघ के दर्शन को राष्ट्र के हर कोने तक पहुंचाने में अवश्य सफल होंगे। शिविर में बेंगलुरु में रहने वाले राजपूत बालकों ने संघ का प्राथमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। बालाजी सिंह ने स्थानीय सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

यथार्थ गीता का वितरण

माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर के निर्देशानुसार पादरू स्थित मां सरस्वती शिक्षण संस्थान, जेतेश्वर शिक्षण संस्थान तथा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नवाडिया बेरा के शिक्षक गणों को स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज कृत 'यथार्थ गीता' पुस्तक का निशुल्क वितरण किया गया। इस दौरान सिवाना प्रांतप्रमुख भैरू सिंह पादरू व उमेद सिंह सिणेर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

धानेरा में कार्य योजना बैठक संपन्न

उत्तर गुजरात संभाग के बनासकांठा प्रांत की कार्ययोजना बैठक 1 मई को दोपहर 1 से 3 बजे तक धानेरा स्थित राजपूत छात्रावास में संपन्न हुई। बैठक के दौरान प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर ने उपस्थित स्वयंसेवकों के साथ आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर (बालक व बालिका) के संबंध में चर्चा की। प्रांत के चारों मंडल प्रमुखों ने सत्र 2022-23 के लिए कार्ययोजना प्रस्तुत की। प्रांत के चारों मंडल में बालकों के 4 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर तथा प्रांत स्तर पर एक बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के आयोजन का निर्णय हुआ तथा शिविर स्थल के रूप में डेल, करजोड़ा, नैनावा, धनपुरा एवं पीलूड़ा गांव निश्चित किए गए। संघ स्थापना दिवस, पूज्य श्री तन सिंह जी जयंती व अन्य महापुरुषों की जयंतियों पर कार्यक्रम आयोजित करने पर भी चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त प्रांत के 25 गांवों में संपर्क यात्रा के आयोजन का भी निश्चय किया गया। प्रांत में चल रही शाखाओं पर भी चर्चा हुई तथा आगामी सत्र में 21 नई शाखाएं शुरू करने का भी निर्णय हुआ।

संपादकीय

ऐतिहासिक नायकों ढूंढ रहे हैं विघटन की प्रेरणा

इतिहास अपने आप में एक सामग्री है, इसका उपयोग करने वाले का दृष्टिकोण जैसा होता है वैसा ही उसका उपयोग होता है। इतिहास में हजारों नायक हैं और उनका चरित्र हम सबको श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने को प्रेरित करता है लेकिन किस नायक के जीवन के कौनसे पक्ष के हम उपासक हैं यह हमारी स्वयं की प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। हम यहीं नहीं रुकते बल्कि उस नायक के व्यक्तित्व को ही हम हमारी सोच के अनुरूप गढ़ने का प्रयास करते हैं और हमारा यह प्रयास उस नायक को उसके नायकत्व से विचलित कर विवादित बना देता है। बात तो इससे भी आगे तब बढ़ जाती है जब हम हमारी सोच को पुष्ट करने के लिए खलनायकों को ही नायक के रूप में पेश करना प्रारंभ कर देते हैं और समाज के वर्तमान वातावरण में हम ऐसे प्रयासों के उदाहरण भी आसानी से ढूंढ सकते हैं। भारतीयता का नाम लेकर अपना राजनीतिक एजेंडा लागू करने वाले संगठनों से जुड़े लोग जब रावण जैसे आततायी में भी नायकत्व ढूंढने लगते हैं तो हमें समझ जाना चाहिए कि लोग अपने स्वार्थ और सोच की पुष्टि के लिए किस प्रकार खलनायकों में भी नायकत्व ढूंढते हैं।

लेकिन हम तो बात नायकों की कर रहे हैं। देश की वर्तमान व्यवस्था में सत्ता के शीर्ष तक पहुंचने के लिए समाज में विघटन पैदा कर जातीय सहित विभिन्न प्रकार की गोलबंदी आवश्यक है और इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए इन तत्वों द्वारा अपनाये जाने वाले साधनों में एक साधन ऐतिहासिक नायक भी हैं। इसके लिए ऐसे नायकों को ढूंढा जाता है जो लोगों में जातीय स्वाभिमान के नाम पर मिथ्या अहंकार पैदा कर स्वयं को अन्यों से श्रेष्ठ सिद्ध करने में सहायक बन सकें। ऐसे नायकों को ढूंढा जाता है जिनको किसी न किसी बहाने जातीयों के बीच संघर्ष का वाहक बनाया जा सके और उस संघर्ष के बल पर सत्ता की सीढियां चढ़ने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाया जा सके। उदाहरण के लिए हम देखें तो विगत वर्षों में ब्राह्मण समाज में भगवान विष्णु के अंशावतार परशुराम जी को समाज के नायक के रूप में पेश किए जाने की प्रवृति बढ़ी है और उनके जन्मदिन को ब्राह्मण अस्मिता के रूप में प्रचारित किया जाता है। परशुराम जी के नाम पर अनेक संगठन बन रहे हैं और उनको ब्राह्मण शक्ति के प्रतीक रूप में पेश किया जाता है जबकि हमारे शास्त्रों में जिस ब्राह्मणत्व की बात की जाती है उसके अनुसार तो स्वयं को ब्राह्मण कहने वालों के आदर्श नायक महर्षि वशिष्ठ होने चाहिए, महर्षि अगस्त्य होने चाहिए, अंगिरा होने चाहिए, ब्राह्मण पिता की संतान भगवान वेदव्यास होने चाहिए या उन अन्य हजारों महात्माओं में से कोई होना चाहिए जिन्होंने इस राष्ट्र के लिए क्षात्र शक्ति को प्रशिक्षित कर अपने ब्राह्मणत्व को सार्थक किया। लेकिन विडंबना यह है कि ब्राह्मण समाज के आधुनिक आदर्श वे महात्मा नहीं हैं जिन्होंने वास्तव में ब्राह्मणत्व का निर्वहन किया बल्कि वे हैं जिन्होंने एक समय विशेष में अल्प अवधि के लिए क्षत्रियत्व को अंगीकार किया। ऐसा इसलिए कि उन महात्माओं को आदर्श बनाने पर जुड़ाव होता है विघटन नहीं और आज की व्यवस्था के संचालकों को जुड़ाव नहीं विघटन चाहिए क्यों कि इसके अभाव में उनकी रोटियां सिकती नहीं हैं और झूठे जातीय स्वाभिमान के नाम पर समाज के लोग इनके झांसे में नहीं आ पाते हैं। इसी प्रकार अपने आपको दलित कहने वाले समाज का उदाहरण देखा जा सकता है। वर्तमान में उनके नायक रैदास नहीं हैं। वाल्मीकि भी नहीं हैं। वे लोग अपने समाज में हुए एक से बढ़कर एक संतों को अपना नायक नहीं मानते जिनकी कृपा और चरणरज हासिल करने के लिए समाज के सभी वर्गों के सभी प्रकार के लोग लालायित रहते थे बल्कि वे अपना नायक उन लोगों में ढूंढते हैं जो उन्हें समाज शरीर से पृथक अपना अलग से अस्तित्व कायम करने को प्रोत्साहित करते हैं और जिनके बल पर अन्य समाजों से उनकी संघर्षप्रदायी दूरी बने तथा उन दूरियों के बल पर सत्ता सुंदरी का सानिध्य पाने को उत्सुक लोग अपने लक्ष्य को हासिल करते रहें। ऐसे लोग शंबूक में नायकत्व खोज कर उसके बल पर स्वयं के पनपने का आधार तैयार करते हैं। यह प्रवृत्ति भक्त शिरोमणि माता मीरा की भक्ति से प्रेरणा लेने की बात नहीं करती बल्कि उनको पुरुष सत्ता के विरुद्ध विद्रोही का स्वरूप प्रदान कर महिलाओं की दलबंदी करती है। ये महिला सशक्तिकरण के लिए जालोर की हीरा दे, जैसलमेर की उमादे भटियाणी या जोधपुर की जसवंत दे हाड़ी का आदर्श प्रस्तुत नहीं करते बल्कि पुरुषों से विद्रोह कर परिवार में विघटन पैदा करने वाली महिलाओं में नायकत्व खोजते हैं। विघटनकारी तत्व महाराणा प्रताप और अकबर के संघर्ष को सांप्रदायिक संघर्ष का स्वरूप देते हैं। वे प्रताप के सर्वधर्मसमभावी स्वरूप को प्रकट नहीं होने देने के प्रयास में जालोर के ताजे खां से मिले सहयोग को प्रकाशित नहीं करते। वे हाकम खां सूर के सेनापतित्व को भी अनमने भाव से ही स्वीकार करते हैं। इतिहास के ऐसे तथ्यों को छिपाकर रखने के प्रयास का ही परिणाम है कि हम आज भी नहीं जानते कि महाराणा प्रताप के समय विकसित हुई चित्रकला की विश्व प्रसिद्ध चावंड शैली के विकास में योगदान देने वाला उनके दरबार में रहने वाला एक मुस्लिम चित्रकार था। ऐसे तत्व ये नहीं चाहते कि महाराणा प्रताप की शेरपुर वाली वह घटना प्रचारित हो जिसके तहत अब्दुर्रहीम खानखाना की महिलाओं को सुरक्षित लौटाया जाता है और जिस घटना से प्रभावित होकर एक मुस्लिम सेनापति भगवान कृष्ण का उपासक बनकर संत बन गया। इन सब तत्वों के प्रभाव में आकर हम भी जाने अनजाने इनके सहयोगी बन जाते हैं। ये सभी कभी वामपंथ के नाम पर हमें आकर्षित करते हैं तो कभी दक्षिणपंथ के नाम पर। हमें ये दूसरी जातियों से मिथ्या स्वाभिमान के नाम पर लड़ाने का वातावरण तैयार करते हैं और हम इनके झांसे में आकर समाज के विघटन में सहयोगी बन जाते हैं। इसलिए हमें सावधानी बरतनी चाहिए। हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि हमारे इतिहास का एक भी नायक विघटनकारी नहीं था। हमारे पूर्वजों ने विशुद्ध रूप से क्षात्र धर्म का पालन करने को अपना जीवन ध्येय बनाया और यह जीवन ध्येय हमारे रक्त में इस तरह समाहित था कि हमारे पूर्वज अनायास ही सदैव सर्वजन हिताय बहुजन सुखाय को चरितार्थ करते थे। लेकिन आज जब चारों तरफ ऐसा विघटनकारी वातावरण बना हुआ है तब हमारा प्राथमिक दायित्व बन जाता है कि हम इन विघटनकारी तत्वों से अपने आपको बचायें और हमारे पूर्वजों के सर्वसमावेशी चरित्र को उजागर करें तथा अपने आपको तद्नुरूप तैयार करने के मार्ग पर प्रशस्त होवें। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसा ही मार्ग है जो हमें इतिहास के विघटनकारी नहीं बल्कि योजक स्वरूप से अवगत करवाता है और फिर उसे हमारे में चरितार्थ करने के लिए तैयार करता है।

खरी-खरी

संविधान में वर्णित भारतीय संघ व वर्तमान स्थिति

हमारा संविधान हमारे आदर्शों का संकलन है। इसकी प्रस्तावना से लेकर विभिन्न अनुच्छेदों तक में प्रारंभ से चले आ रहे भारतीय आदर्शों एवं इसके निर्माण के समय माने जाने वाले आदर्शों का समावेश किया गया है और उन आदर्शों को लागू करने के तत्समय संभव तरीकों का वर्णन किया गया है एवं साथ ही उनमें समयानुसार बदलाव की संभावनाओं को भी यथावत रखते हुए संशोधन की व्यवस्था को भी अंगीकार किया गया है। ऐसा ही एक आदर्श है केन्द्र व राज्य संबंध। संविधान में माना गया है कि भारत एक विशाल देश है इसलिए इसे एक ही स्थान से सफलता पूर्वक संचालित नहीं किया जा सकता। एक केन्द्रीय सत्ता विविधतापूर्ण भारत का समुचित संचालन नहीं कर सकती इसलिए राज्यों में विभक्त कर इसे राज्यों का संघ बनाया गया और संविधान की भाषा में भारत को राज्यों का संघ घोषित किया गया। यह संघ समुचित रूप से संचालित हो सके इसलिए केन्द्र और राज्यों के कार्यक्षेत्र का निर्धारण करने के लिए विषयों का बंटवारा किया गया है। केन्द्र सरकार द्वारा किए जाने वाले कार्यों को केन्द्रीय सूची में रखा गया है वहीं राज्यों द्वारा किए जाने वाले कार्यों को राज्य सूची में रखा गया है। कुछ काम जो दोनों के अधिकार क्षेत्र में आयेंगे उन्हें समवर्ती सूची में रखा गया है और इनमें विवाद होने पर अंतिम निर्णय केन्द्र के अधीन रखा गया है। यह शक्ति पृथक्करण का आदर्श सिद्धांत है और संविधान निमार्ताओं ने माना कि भविष्य में बनने वाली केन्द्र व राज्य सरकारें इस आदर्श सिद्धांत का पालन करेगी जिससे कोई विवाद खड़ा नहीं होगा और दोनों स्तर पर शासन का सुचारू संचालन हो सकेगा।

लेकिन व्यवहार में क्या हो रहा है हम सबके सामने है। आजादी के बाद जब से केन्द्र और राज्य में विपरीत राजनीतिक विचारधारा वाले दलों की सरकारें बनने लगी तब से ही इस आदर्श का बार बार उल्लंघन किया गया और यह आदर्श मात्र संवैधानिक आदर्श बनकर रह गया है। आजादी के बाद लंबे समय तक केन्द्र में कांग्रेस की सरकार रही और जिन जिन राज्यों में विपक्षी दलों की सरकारें बनीं उनके साथ विवादों के कारण अनेक जगह अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति शासन के रूप में इस सिद्धांत का हरण कर केन्द्र सरकार द्वारा सत्ता का केन्द्रीयकरण अपने हाथों में किया गया। अब नये तरीके से इस आदर्श का हरण किया जा रहा है। हम प्रायः समाचार माध्यमों में सुनते और पढ़ते आ रहे हैं कि केन्द्र सरकार राज्यों को उनका करों का हिस्सा समय पर नहीं दे रही है, इसमें भेदभाव बरता जाता है और इस कारण राज्यों का समान्य कामकाज भी अटकता जा रहा है। दूसरी ओर संविधान में जिन विषयों पर राज्यों को अधिकार दिए गये हैं उनमें राष्ट्रीय स्तर पर केन्द्र द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर राज्य सहयोग नहीं कर रहे हैं। पानी के विषय को लेकर राजस्थान के मुख्यमंत्री व यहां के जल संसाधन मंत्री की केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री से होने वाली नोंक झोंक व परस्पर शिकायतें इसका उदाहरण है। स्वास्थ्य राज्य का विषय है लेकिन कोरोना महामारी के समय इस विषय को लेकर राज्यों और केन्द्र की नूरा कुश्ती को हम सबने देखा है। पंजाब चुनावों के समय प्रधानमंत्री की सुरक्षा को लेकर राज्य और केन्द्र की नूरा कुश्ती हम सबसे कहां छिपी है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

गजेन्द्र सिंह शेखावत व राज्यवर्धन सिंह राठौड़ पहुंचे राजपूत सभा भवन

राजपूत सभा जयपुर की नई कार्यकारिणी समिति के निर्वाचन के पश्चात केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत तथा जयपुर ग्रामीण संसद राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने राजपूत सभा भवन पहुंचकर कार्यकारिणी के पदाधिकारियों से भेंट की। 28 अप्रैल को सभा भवन पहुंचे गजेंद्र सिंह शेखावत ने राजपूत सभा के अध्यक्ष रामसिंह चंदलाई तथा अन्य सदस्यों से चर्चा में कहा कि राजपूत सभा की कार्यकारिणी में निर्वाचित होने के बाद आप सभी की जिम्मेदारी समाज के प्रति और अधिक बढ़ गई। 6 मई को राज्यवर्धन सिंह राठौड़ राजपूत सभा भवन पहुंचे तथा समाज के नवयुवकों को खेल के क्षेत्र में कैरियर निर्माण का में सहयोग करने का आश्वासन दिया। कार्यकारिणी के सदस्यों ने गजेंद्र सिंह जी और राज्यवर्धन सिंह जी को संस्था द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों से अवगत कराया

बजरंग सिंह रॉयल क्षात्र गौरव अलंकरण से सम्मानित

राती घाटी समिति बीकानेर द्वारा बीकानेर के 535वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में नगर के वरिष्ठ नागरिकों को विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान के लिए अलंकरण प्रदान करके सम्मानित किया जा रहा है। इसी क्रम में 8 मई को क्षत्रिय सभा बीकानेर के पूर्व अध्यक्ष बजरंग सिंह रॉयल को भी समिति की ओर से क्षात्र गौरव अलंकरण प्रदान किया गया और प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। इस दौरान समिति के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह बीका, उपाध्यक्ष महावीर सिंह पंवार तथा कर्नल हेम सिंह शेखावत सहित अनेको गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे।

राजपूत सभा जयपुर महानगर की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

राजपूत सभा जयपुर महानगर की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह राजपूत सभा भवन जयपुर में संपन्न हुआ। गणपत सिंह राठौड़ लगातार दूसरी बार राजपूत सभा जयपुर महानगर कार्यकारिणी के अध्यक्ष चुने गए हैं। राजपूत सभा भवन अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई ने सभी नवनिर्वाचित सदस्यों को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	उ.प्र.शि.	19.05.2022 से 29.05.2022 तक	आलोक आश्रम (बाड़मेर)। बाड़मेर से गेहूं रोड पर स्थित। - कम से कम 10वीं कक्षा की परीक्षा दे चुके हों। - दो प्राथमिक तथा एक माध्यमिक शिविर कर चुके हों, वे ही आ सकते हैं। - 60 वर्ष से ऊपर की आयु वाले या तो आमंत्रित हों या पूर्व स्वीकृति ले ली हो, वे ही आ सकेंगे। 18 मई की शाम तक पहुंचना है। गणवेश लेकर आएं।
2.	उ.प्र.शि. (बालिका)	19.05.2022 से 29.05.2022 तक	विरात्रा (बाड़मेर)। बाड़मेर से बसें उपलब्ध हैं। - 9वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा कम से कम दो शिविर कर चुकी हों, वे ही आ सकेंगी। - केशरिया गणवेश आवश्यक

गजेन्द्रसिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

डूंगरी (रानीवाड़ा) में सामाजिक समरसता की पहल

जालौर जिले की रानीवाड़ा तहसील के डूंगरी गांव निवासी भैरू सिंह और चंदन सिंह देवड़ा के परिवार ने अपनी मुंहबोली बहन जसीबेन डाभी की पुत्री के विवाह के अवसर पर मायरा भरकर सामाजिक सौहार्द का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। ग्राम विकास अधिकारी उम्मेद सिंह देवड़ा ने बताया कि राजपूतों ने हमेशा दलितों व पिछड़ों को सम्मान दिया है और उनकी सुरक्षा की है। उसी परंपरा का पालन करते हुए डूंगरी के देवड़ा परिवार ने मेघवाल समाज की अपनी मुंहबोली बहन की पुत्री की शादी में मायरा भरकर सामाजिक सद्भावना को बढ़ाने वाला कार्य किया है, जिसकी सभी ग्रामवासियों द्वारा सराहना की जा रही है। इस दौरान संत बगदाराम महाराज सहित अनेकों ग्रामवासी उपस्थित रहे।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

देश भर में उत्साह से मनाई आंग्ल तिथि अनुसार प्रताप जयंती

बीकानेर

बढाढ़र

मुम्बई

(पेज एक से लगातार)

इतिहास हमारे लिए श्रेष्ठतम शिक्षक है और इसलिए आवश्यक है कि हम अपने इतिहास का संरक्षण करें और सही इतिहास को सभी तक पहुंचाएं। उन्होंने कहा कि राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, प्रताप, पद्मिनी जैसे व्यक्तित्व के निर्माण के लिए जो दो मुख्य आवश्यकताएं हैं वे हैं - रक्त की पवित्रता और वातावरण की अनुकूलता। हमारी माताओं के सतीत्व और बलिदान के कारण हमारी कौम में रक्त की पवित्रता बनी हुई है लेकिन अनुकूल वातावरण के अभाव में हम अपनी श्रेष्ठताओं को खोते जा रहे हैं। पूज्य श्री तन सिंह जी ने इसी पीड़ा से पीड़ित होकर समाज की नई पीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कारों का बीजारोपण करने, उन्हें इतिहास, संस्कृति और राष्ट्रीय मूल्यों का बोध कराने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में एक अभ्यास आधारित सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली का सूत्रपात किया। हीरक जयंती के बाद सभी जगह से मांग आ रही है कि संघ कार्य का संपूर्ण भारत में विस्तार होना चाहिए। आज इस कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के मूल निवासी उपस्थित हैं, श्री क्षत्रिय युवक संघ आप सबका आह्वान करता है कि आप संघ को समझने और स्वयं में आमंत्रित करने के लिए प्रशिक्षण शिविरों में आयें और फिर अपने अपने क्षेत्र में संघ को पहुंचाने में सहयोगी बनें। महेंद्र सिंह सेखाला ने कार्यक्रम की भूमिका बताई। प्रांत प्रमुख रेवंत सिंह धीरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में दिल्ली के जेएनयू, डीयू, जामिया आदि विश्वविद्यालयों के छात्र, प्राध्यापक व दिल्ली में रहने वाले अनेकों समाज बंधु सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के पश्चात स्नेह भोज भी रखा गया। इससे पूर्व 8 मई को ही फरीदाबाद में भी महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। राजकुल सांस्कृतिक संस्थान द्वारा महाराणा प्रताप भवन में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कहा कि महापुरुषों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने का श्रेष्ठतम तरीका है उस मार्ग पर चलना, जिस पर वे चले थे। महाराणा प्रताप जैसे हमारे पूर्वजों ने स्वधर्मपालन के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया किंतु स्वधर्म का त्याग नहीं किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी हमें हमारे स्वधर्म की याद दिला कर उसके पालन का अभ्यास करवाने का कार्य कर रहा है। समाज में स्वधर्म की मान्यता को पुनः स्थापित करना और आने वाली पीढ़ी को स्वधर्मपालन में प्रवृत्त करना ही हमारे महान पूर्वजों के प्रति हमारी सच्ची कृतज्ञता हो सकती है इसलिए हम सभी मिलकर संघ को घर-घर तक पहुंचाने में सहयोगी बनें। श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक तथा राजकुल सांस्कृतिक संस्थान के अध्यक्ष नारायण सिंह पांडूराई ने संस्था द्वारा विगत 2 वर्षों में किए गए कार्यों की जानकारी प्रदान की तथा संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया ने जून में श्री क्षत्रिय युवक संघ के तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के आयोजन के संबंध में बताया। संजीव चौहान, वीरेंद्र गौड़, अनिल गौड़, हुकम सिंह भाटी, राजेश रावत, गिरदावर सिंह राठौड़, वंदना सिंह (अधिवक्ता) ने भी अपने विचार रखे। प्रांत प्रमुख रेवत सिंह धीरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

नई दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में भी श्री क्षत्रिय युवक संघ तथा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा महाराणा प्रताप जयंती इतिहास वाचन व कविता पाठ आदि कार्यक्रमों के माध्यम से मनाई गई। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की जेएनयू इकाई के अध्यक्ष रोहित कुमार सिंह, श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक महेंद्र सिंह सेखाला, ओंकार सिंह पांचोटा, अंकेश भाटी सहित अनेकों कार्यकताओं ने महाराणा प्रताप की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करके अपनी कृतज्ञता प्रकट की। महाराष्ट्र संभाग में दक्षिण मुम्बई प्रांत में तनेराज शाखा ने गिरगाँव चौपाटी पर 8 मई को महाराणा प्रताप की जयंती शाखा स्तर पर मनाई। कार्यक्रम में उपस्थित स्वयंसेवकों ने महाराणा प्रताप की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर कृतज्ञता ज्ञापित की। प्रांत प्रमुख देवीसिंह झलोड़ा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उत्तर मुंबई प्रांत की भायंदर साप्ताहिक शाखा में 8 मई को शाम 6 से 7 बजे तक महाराणा प्रताप जयंती कार्यक्रम रखा गया। इसी दिन प्रांत की मलाड शाखा में भी प्रताप जयंती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख नीर सिंह सिंघाणा ने कहा कि महाराणा प्रताप हमारे लिए आदर्श हैं और उन्हीं की भांति हमें भी अपने समाज, संस्कृति और राष्ट्र को गौरवान्वित करना है। उन्होंने स्वयंसेवकों के साथ आगामी 14 से 16 मई तक हुबली में हो रहे प्राथमिक प्रशिक्षण

जोधपुर

शिविर तथा 19 से 29 मई तक बाड़मेर में हो रहे उच्च प्रशिक्षण शिविर के संबंध में भी चर्चा की और बताया कि यदि हमें संघ को पूरी तरह से समझना है तो शिविर करना आवश्यक है। गुमान सिंह केशवना ने कार्यक्रम का संचालन किया। जैसलमेर स्थित संभागीय कार्यालय तनाश्रम में भी स्वयंसेवकों द्वारा प्रताप जयंती मनाई गई। हिंदू सिंह म्याजलार ने महाराणा प्रताप के संघर्षपूर्ण जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि उन्होंने अपनी आने वाली पीढ़ी के गौरव के लिए संघर्ष किया था और अब उस गौरव की कीमत चुकाने की हमारी बारी है। इसका मार्ग हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रदान कर रहा है। महेंद्र सिंह दामोदरा, तीर्थ कुमार, छोटू सिंह बडोडा गांव व महेंद्र सिंह बरना ने भी अपने विचार रखे। 9 मई को लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के बीदासर मंडल में परावा गांव में प्रताप जयंती मनाई गई। प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढिंगसरी ने महाराणा प्रताप का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम भी उनसे प्रेरणा लेकर क्षात्र धर्म पालन करते हुए अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें भी महाराणा प्रताप जैसे महान चरित्र का अनुकरण करने का अवसर उपलब्ध करवा रहा

जेएनयू, दिल्ली

है। विक्रम सिंह सांडवा ने महाराणा प्रताप की तरह सभी को साथ लेकर चलने व सभी का सम्मान व सहयोग करने की बात कही। दौलत सिंह डाबड़ी ने बालिका शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित किया। कमल सिंह परावा ने प्रशासनिक सेवाओं में समाज के युवाओं की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता जताई। रूप सिंह परावा ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने की बात कही। बाड़मेर जिले के धोरीमना उपखंड में खारी स्थित जांभोजी के मंदिर में भी महाराणा प्रताप की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक कमल सिंह गेहूं ने कहा कि महाराणा प्रताप क्षात्रधर्म के उपासक, संघर्ष एवं पुरुषार्थ के पर्याय थे। उनका जीवन कर्तव्य पालन के मार्ग में बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने की प्रेरणा देता है। स्वरूप सिंह खारी ने महाराणा प्रताप के जीवन की विभिन्न घटनाओं का वर्णन करते हुए उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। प्रधानाध्यापक आशुराम ने कहा कि महाराणा प्रताप ने मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए समस्त सुखों को ठुकरा दिया था। ऐसा करना हरेक के लिए संभव नहीं है, केवल महापुरुष ही ऐसा कर सकते हैं। सुखराम सारण, दयानंद, किशना राम गोदारा ने भी अपने विचार रखे और संकीर्णताओं को त्याग कर राष्ट्र के लिए एक होने की बात कही। बीकानेर स्थित श्री बीदासर हाउस में महाराणा प्रताप जयंती श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं क्षत्रिय महासभा बीकानेर द्वारा मनाई गई। संभागप्रमुख रेवंत सिंह जाखासर ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम हमारे लिए प्रेरणास्रोत हैं। अपने गौरवशाली इतिहास को जानने से हमें एक नई ऊर्जा प्राप्त होती है जिसके द्वारा हम अपने भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। उम्मेद सिंह सुल्ताना ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप का चारित्रिक बल इतना सशक्त था की उन्होंने शत्रुओं को भी अपना प्रशंसक बना लिया। उनकी महानता ने ही कट्टर मुगल सेनापति अब्दुल रहीम खानखाना को कवि रहीम बना दिया। भंवर सिंह ऊदट ने महाराणा प्रताप की गोरिल्ला युद्ध शैली के बारे में बताते हुए कहा कि वियतनाम जैसे छोटे से देश ने भी महाराणा प्रताप से प्रेरणा लेकर अमेरिका के विरुद्ध गोरिल्ला युद्ध शैली का प्रयोग किया और अमेरिका को कड़ी टक्कर दी। जुगल सिंह बेलासर ने कार्यक्रम का संचालन किया व करण प्रताप सिंह सिसोदिया ने सभी का आभार जताया। कार्यक्रम में श्री सादुल राजपूत छात्रावास के छात्रों व क्षत्रिय महासभा की कार्यकारिणी के सदस्यों सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। बालोतरा स्थित वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास में 9 मई को प्रताप जयंती मनाई गई। चंदन सिंह थोब, प्रवीण सिंह जसोल, हुकम सिंह अजीत, सुमेर सिंह कालेवा, बलवंत सिंह कोटडी व महेशपाल सिंह चौहान ने महाराणा प्रताप के शौर्य, वीरता, मातृभूमि की रक्षार्थ उनके संघर्ष आदि के बारे में उपस्थित समाज बंधुओं को विस्तृत जानकारी दी। जोग सिंह चिड़िया ने महाराणा प्रताप का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। जोधपुर संभाग में भी 9 मई को विभिन्न स्थानों पर महाराणा प्रताप जयंती मनाई गई। जोधपुर शहर प्रान्त के भीतरी शहर मंडल के अंतर्गत हनवंत शाखा में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसका संचालन मोहन सिंह गंगासरा ने किया। गुमान सिंह बेदु ने महाराणा प्रताप का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। (शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ चार का शेष)

संविधान...

प. बंगाल चुनाव व उसके बाद बने हालात इस संवैधानिक आदर्श की खुले आम धज्जियां उड़ा रहे हैं। राज्यपाल एक संवैधानिक पद है जिसकी गरिमा बनाई रखी जानी चाहिए लेकिन पं. बंगाल के राज्यपाल और मुख्यमंत्री के बीच चल रहा विवाद क्या इस गरिमा को तार तार नहीं करता? वहां के मुख्य सचिव को लेकर हुआ नाटक क्या इस आदर्श के अनुकूल था? कानून व्यवस्था राज्य का विषय है और इसके लिए गठित पुलिस बल राज्य के अधीन होता है, वह राज्य में व्यवस्था कायम करने के लिए होता है, उस राज्य के मुख्यमंत्री या सत्तारूढ़ राजनीतिक दल की व्यक्तिगत सेना नहीं होती लेकिन हाल ही के समय में हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं क्या सिद्ध करती हैं? एक राज्यपाल के व्यक्तिगत अहं को तुष्ट करने के लिए बिहार की पुलिस राजस्थान के सुदूर शहर बाड़मेर से एक पत्रकार को गिरफ्तार करके ले जाती है। राजस्थान की सत्ता के लिए सत्तारूढ़ पार्टी में चले संग्राम में राजस्थान पुलिस और हरियाणा पुलिस जिस प्रकार आमने सामने हुई क्या वह इस संवैधानिक आदर्श का पालन था? असम की पुलिस रात के अंधेरे में गुजरात के एक विधायक को इसलिए गिरफ्तार कर लेती है क्योंकि उसने असम के मुख्यमंत्री के विरुद्ध बोल दिया है और फिर ये ही लोग संवैधानिक व्यवस्था की बात करते हैं? दिल्ली पुलिस को लेकर दिल्ली के मुख्यमंत्री और उनकी पार्टी द्वारा लगातार उठाये जाने वाले प्रश्न क्या दोनों तरफ से संवैधानिक आदर्शों के पालनार्थ होते हैं? दिल्ली के भाजपा नेता तेजिंदर बग्गा का मामला तो इस संवैधानिक आदर्श की धज्जियां उड़ाने का आदर्श उदाहरण है। पंजाब की पुलिस दिल्ली के मुख्यमंत्री के खिलाफ की गई टिप्पणी के लिए दिल्ली में निवासरत नागरिक को केन्द्र के अधीन दिल्ली पुलिस की जानकारी के बिना गिरफ्तार करके ले जाती है और दिल्ली पुलिस उनकी गुमसुदगी की रिपोर्ट दर्ज कर पीछा करती है। केन्द्र में सत्तारूढ़ पार्टी की हरियाणा सरकार पंजाब पुलिस को हरियाणा में ही रोक लेती है और दिल्ली पुलिस बग्गा साहब को वापस ले जाती है। क्या कोई समझदार नागरिक बता सकता है कि राज्यों और केन्द्र को दिए संवैधानिक अधिकार क्या इसीलिए दिए गये हैं? क्या अब देश में कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए बनाये गए राज्यों और केन्द्र के अर्द्धसैनिक बल राजनीतिक दलों के व्यक्तिगत सैनिकों की तरह कार्य करेंगे और यही उनकी राज्य निष्ठा का प्रमाण रहेगा?

आखिर इन परिस्थितियों का कारण क्या है? इतने श्रेष्ठ आदर्शों को संजोये हमारा संविधान इन सबको रोक क्यों नहीं रहा? क्या उन आदर्शों में ही कोई खोट है या संविधान में कोई खोट है? यदि हम गंभीरता से विचार करेंगे तो पायेंगे कि व्यवस्था अपने आपमें कोई उपाय नहीं होता। व्यवस्था चाहे कितनी ही आदर्शवादी बना दी जाए लेकिन उन आदर्शों को धरती पर उतारने वाले लोग यदि उन आदर्शों के वाहक न हों तो वे आदर्शों को धत्ता बता कर उस व्यवस्था का अपने हित में उपयोग करते हैं। हमारे देश में ऐसा ही हुआ। हमारे राजनीतिक नेतृत्व की कथनी और करनी में फर्क है। हम बात तो आदर्शों की करते हैं, सिद्धांतों की करते हैं लेकिन जब उन्हें धरती पर उतारने की बारी आती है तो सामान्य मानवीय कमजोरियों का तर्क देकर उनके उल्लंघन को युक्तिसंगत बताने लगते हैं, राजनीति की दुहाई देकर, जमाने की दुहाई देकर, व्यक्तिगत कमजोरियों की दुहाई देकर हम उन उल्लंघनों को न्यायसंगत बता कर अपने आपको बचा लेते हैं और इसी कारण हमारे व्यवस्थागत आदर्श धरती पर नहीं उतर पाते। आदर्शों और सिद्धांतों के प्रति जिस समर्पण और निष्ठा की आवश्यकता होती है वह त्याग और बलिदान की परंपराओं से प्रस्फुटित होती है लेकिन जहां भोगवादी संस्कृति आदर्श बन गई हो वहां ऐसी निष्ठा और समर्पण का अंकुरण ही नहीं हो पाता और हमारा सुविधाभोगी स्वभाव अपनी सुविधा के लिए उन आदर्शों की बलि देने को तत्पर रहता है। ऐसा ही आज हमारे चारों तरफ हो रहा है। जिस प्रकार विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता अपने व्यक्तिगत एवं दलगत अहंकार की तुष्टि के लिए भारतीय संघ में शामिल राज्यों के बीच व राज्य और केन्द्र के बीच संघर्ष की स्थिति उपस्थित कर रहे हैं वह यदि इसी गति से परवान चढ़ता गया तो अनेक बार ऐसा लगता है कि भारतीय संविधान में लिखा शब्द 'भारतीय संघ' केवल संविधान के पन्नों तक सीमित हो जाएगा और व्यवहार में ये सभी राज्य के संसाधनों से ही इसे तार तार कर देंगे।

मोडासा (गुजरात) में स्नेहमिलन का आयोजन

गुजरात में अरावली जिले के मोडासा कस्बे में 1 मई को दो स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुए। मोडासा स्थित राजपूत सोसायटी हॉल में मातृशक्ति का स्नेहमिलन आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज के बालकों व बालिकाओं में संस्कार सिंचन का कार्य कर रहा है, लेकिन यह कार्य सफल तभी होगा जब हम महिलाएं भी इस कार्य में सहयोगी बनेंगी क्योंकि संतान के व्यक्तित्व निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका माता की ही होती है। इसलिए आवश्यक है कि हम संघ से जुड़कर अपने इतिहास, संस्कृति और परंपराओं का ज्ञान प्राप्त करें और उसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाएं। तन्वी बा छेल्लीघोड़ी ने भी अपने विचार रखे।

मोडासा में महिलाओं का यह प्रथम कार्यक्रम था। इसी प्रकार मोडासा स्थित टीबी हॉल में पुरुषों का स्नेह मिलन आयोजित हुआ जिसमें कस्बे में रहने वाले समाजबंधु सम्मिलित हुए। वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह हरदास का बास ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया तथा बताया कि जिस प्रकार का शिक्षण आज के समय में विद्यालयों आदि में मिल रहा है वह केवल पेट भरने तक की ही शिक्षा देता है लेकिन व्यक्ति को श्रेष्ठता की ओर बढ़ने का मार्ग नहीं दिखाता। श्री क्षत्रिय युवक संघ शिक्षण की इसी कमी को पूरा कर रहा है और स्वधर्म व कर्तव्य पालन का शिक्षण समाज की युवा पीढ़ी को दे रहा है। गांधीनगर की राजपूत आईएएस कोचिंग अकादमी के निर्देशक अशोक सिंह परमार तथा डॉ नागेंद्र सिंह ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम के दौरान अगस्त माह में मोडासा में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के आयोजन का भी निर्णय किया गया। पूर्णचंद्र सिंह छेल्लीघोड़ी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

(पृष्ठ छह का शेष)

देशभर... मंडल प्रमुख गोपाल सिंह मुंगेरिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। श्री सरदार शाखा में भी जयंती मनाई गई जिसमें छात्रावास के व्यवस्थापक चैनसिंह ने प्रताप के जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि हम भी अपने जीवन को भी उसी के अनुरूप ढालें तभी उनकी जयंती मनाने की सार्थकता है। नांदड़ी मंडल में डिगाड़ी में भी स्थानीय निवासियों द्वारा प्रताप जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें प्रताप की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करके उनके प्रेरणादायी जीवन के बारे में चर्चा की गई। ओसियां प्रान्त के बापिणी में भी प्रताप जयंती मनाई गई। हरियाणा के भिवानी शहर में सेक्टर 13 स्थित मेला ग्राउंड में सभी जाति समाज के लोगों द्वारा मिलकर महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला, कांग्रेस नेता मरमजीत मड्ड, द ग्रेट खली के नाम से प्रसिद्ध संजय सिंह राणा, शेरसिंह राणा आदि वक्ताओं ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महापुरुष पूरे देश की धरोहर होते हैं इसीलिए महाराणा प्रताप से देश के सभी युवाओं को प्रेरणा लेनी चाहिए। पूर्व सीपीएस श्याम सिंह राणा, विधायक घनश्याम सर्राफ, पूर्व मंत्री वासुदेव शर्मा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के पश्चात शहर में शोभायात्रा भी निकाली गई। शेखावाटी प्रांत के धोद मंडल के बढ़ाढर गांव में 9 मई को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रताप जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने उपस्थित समाजबंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया और अपने बालक बालिकाओं को संघ के शिविरों में भेजने का निवेदन किया। राजेंद्र सिंह मुंडरु ने कहा कि समाज को यदि अपना खोया हुआ गौरव वापस प्राप्त करना है तो महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेकर देश, धर्म और संस्कृति के लिए बलिदान करने के लिए तैयार रहना होगा। राम सिंह पिपराली ने भी अपने विचार रखे। प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

मुकनसिंह चेकला के बड़े भाई का देहावसान

संघ के स्वयंसेवक मुकन सिंह चेकला के बड़े भाई **दीप सिंह चेखला** का 8 मई 2022 को आकस्मिक निधन हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें तथा शोक संतप्त परिजनों को संबल प्रदान करें।

दीप सिंह चेकला

गोविंदसिंह आसलसर की पत्नी का देहावसान

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक गोविन्द सिंह आसलसर की धर्मपत्नी **श्रीमती सरोज कंवर** का देहावसान 1 मई 2022 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

श्रीमती सरोज कंवर

महेंद्र सिंह कारोला को पितृशोक

संघ के जालोर संभाग के सांचौर-रानीवाड़ा प्रांत प्रमुख महेंद्र सिंह कारोला के पिता **श्री शम्भू सिंह** का 03 मई 2022 को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

श्री शम्भू सिंह

मोहन सिंह प्यावां को मातृशोक

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक मोहन सिंह प्यावां की माताजी **श्रीमती गेंद कंवर** धर्मपत्नी स्व. श्री राम सिंह जी का 7 मई 2022 को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें तथा परिजनों को संबल प्रदान करें।

श्रीमती गेंद कंवर

कान्हड़देव, वीरमदेव और हीरादे की स्मृति में पराक्रम पर्व का आयोजन

विक्रम संवत 1368 में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा जालौर आक्रमण के समय यहां के शासक कान्हड़देव चौहान तथा उनके पुत्र वीरमदेव द्वारा दिखाए गए अप्रतिम शौर्य, 1584 स्थानों पर एक साथ किए गए जौहर और हीरादे द्वारा मातृभूमि से विश्वासघात करने वाले अपने पति का वध करके रखे गए देशभक्ति के अद्वितीय उदाहरण की स्मृति में संस्कृति शोध परिषद जालौर के तत्वावधान में वैशाख माह की अमावस्या से वैशाख शुक्ल छठ (30 अप्रैल से 6 मई) तक जालौर पराक्रम पर्व मनाया गया जिसके अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। जालौर के ऐतिहासिक युद्ध की 710वीं वर्षगांठ पर आयोजित इन कार्यक्रमों के माध्यम से जालौर वासियों द्वारा मातृभूमि की रक्षार्थ बलिदान हुए वीरों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई। 30 अप्रैल को हीरादे स्मरण सभा एवं दीप दान कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न संस्थाओं की सहभागिता रही। एनसीटीई सदस्य व संस्कृति शोध संस्थान के निदेशक संदीप जोशी ने कार्यक्रम को

संबोधित करते हुए कहा कि जालोर का इतिहास पूरे देश के लिए प्रेरणा देने वाला रहा है। भारतीय परंपरा में नारी के लिए उसका पति सर्वोपरि होता है किंतु यदि पति राष्ट्रद्रोही हो जाए तो वह राष्ट्र के लिए अपने पति का भी बलिदान दे सकती है इस बात को हीरादे ने सिद्ध किया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभागप्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जालौर के गौरवशाली इतिहास को सामने लाने के लिए संस्कृति शोध संस्थान द्वारा जो प्रयास किए जा रहे हैं, वे सराहनीय हैं। हमारे पूर्वजों ने जिस धर्म, संस्कृति और परंपरा की रक्षा के लिए अचिंत्य बलिदान दिए हैं उनका संरक्षण करना हमारा कर्तव्य है। हम अपने वास्तविक इतिहास को जानें और उससे प्रेरणा लेकर कर्तव्यपालन करते हुए समाज, राष्ट्र और मानवता की सेवा करें तभी हम अपने उन पूर्वजों का ऋण चुका सकेंगे। पुरुषोत्तम पोमल और श्रवण सिंह राव ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। ललित दवे ने कार्यक्रम का संचालन किया।

5 मई को सेवा भारती कार्यालय में जौहर स्मृति दिवस मनाया गया जिसके अंतर्गत 'जालोर - गौरवमयी इतिहास, भविष्य की दिशा और हमारा वर्तमान दायित्व' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। 6 मई को कान्हड़देव तथा वीरमदेव के बलिदान दिवस को पराक्रम दिवस के रूप में मनाते हुए जालौर शहर में रैली निकाली गई जिसमें विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। भगत सिंह स्टेडियम से रवाना होकर यह रैली शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए पुनः भगत सिंह स्टेडियम पहुंची। मार्ग में विभिन्न स्थानों पर शहर वासियों द्वारा रैली पर पुष्प वर्षा कर के स्वागत किया गया। शहर के व्यापारियों द्वारा रैली में शामिल लोगों के लिए जल की व्यवस्था भी की गई। जालोर विधायक जोगेश्वर गर्ग, एसडीएम चंपालाल जीनगर सहित अनेकों गणमान्य नागरिक रैली में उपस्थित रहे।

चौपासनी शिक्षा समिति के चुनाव संपन्न

जोधपुर स्थित चौपासनी शिक्षा समिति की जनरल काउंसिल के चुनाव 1 मई को संपन्न हुए जिसमें निम्न 40 सदस्य निर्वाचित घोषित किए गए : अजीत सिंह भाटी, आनंद सिंह जोधा, अर्जुन सिंह बड़गांव, भैरू सिंह तंवर, भैरू सिंह खारिया, भूपत सिंह, भूपेंद्र सिंह सोढा, बिशन सिंह भाटी, चंद्रवीर सिंह, छोटू सिंह उदावत, छोटू सिंह भाटी, दलीप सिंह, दलपत सिंह खींची, देवेंद्र करण, दुर्जन सिंह पुत्र सगत सिंह, दुर्जन सिंह पुत्र खुमान सिंह, गजेंद्र पाल सिंह पोषाणा, गजेंद्र सिंह कालवी, गणपत सिंह राठौड़, हनुमान सिंह, हनवंत सिंह पुत्र रूप सिंह, हनवंत सिंह जैतावत पुत्र मोहन सिंह, जितेंद्र सिंह राठौड़, कान सिंह भाटी, किशोर सिंह, महेंद्र पाल सिंह भवरानी, मानसिंह पाल, मनोहर सिंह बालोत, मोहन सिंह भाटी, मोहन सिंह खींची, नरपत सिंह पाल, राघवेंद्र प्रताप सिंह, राजेंद्र सिंह राठौड़, राम सिंह रोहिणा, रूप सिंह राठौड़, समरजीत सिंह, शंभू सिंह तंवर, वीर सिंह राठौड़, वीरेंद्र सिंह पुत्र जगमाल सिंह, वीरेंद्र सिंह राठौड़ पुत्र करण सिंह। उक्त 40 सदस्यों में से विगत 8 मई को कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें अर्जुन सिंह देवड़ा बड़गांव को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। कार्यकारिणी के सदस्यों के रूप में हनुमान सिंह खांगटा, मानसिंह पाल, मोहन सिंह भाटी, अजीत सिंह भाटी, दलपत सिंह खींची, दुर्जन सिंह सिहड़ार तथा चक्रवर्ती सिंह राखी निर्विरोध निर्वाचित हुए। हनुमान सिंह खांगटा को उपाध्यक्ष, मानसिंह पाल को सचिव तथा दलपत सिंह खींची को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

गिरिराज सिंह लोटवाडा की प्रथम पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

राजपूत सभा जयपुर के पूर्व अध्यक्ष गिरिराज सिंह लोटवाडा की प्रथम पुण्यतिथि पर राजपूत सभा भवन जयपुर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 29 अप्रैल को किया गया जिसमें समाजबंधुओं द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। जयपुर सांसद रामचरण बोहरा, राजपूत सभा के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति इस दौरान उपस्थित रहे।

महाराव शेखाजी को पुण्यतिथि पर किया वंदन

शेखावत वंश के मूल पुरुष वीर शिरोमणी महाराव शेखाजी की 534वीं पुण्यतिथि के अवसर पर अक्षयतृतीया (3 मई) को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की सीकर टीम द्वारा रलावता स्थित शेखा जी स्मारक पर जाकर यज्ञ का आयोजन किया गया तथा वीरवर शेखाजी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। इस दौरान सीकर प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जूलियासर, राजेंद्र सिंह मुंडरु, सुरेंद्र सिंह तंवरा सहित अनेकों कार्यकर्ता उपस्थित रहे। जयपुर स्थित श्री भवानी निकेतन परिसर में महाराव शेखा जी की पुण्यतिथि के उपलक्ष में 3 मई को सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। महाराव शेखा संस्थान के तत्वावधान में आयोजित सभा में प्रार्थना, भजन आदि के माध्यम से महाराव शेखा जी के प्रति श्रद्धा प्रकट की गई। संस्थान के सचिव सम्पत सिंह धमोरा ने बताया

कि इस अवसर पर ख्यातनाम भजन गायक घनश्याम दास जादौन ने भजनों की प्रस्तुति दी। उपस्थित जन समुदाय ने शेखावाटी के संस्थापक, सांप्रदायिक सद्भाव के प्रतीक एवं नारी उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष कर प्राणोत्सर्ग करने वाले महान योद्धा शेखाजी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। पंडित राधेश्याम सिखवाल ने शेखा जी के जीवन की विभिन्न घटनाओं के बारे में बताते हुए उन्हें सर्वधर्म समभाव व नारी सम्मान का आदर्श बताया। श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी, महाराव शेखा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष जालिम सिंह आसपुरा सहित अनेकों समाज बंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान पूर्व उपराष्ट्रपति स्वर्गीय भैरों सिंह शेखावत को भी स्मरण करके श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org